Lecture Series - 72
Date :- 12/07/2020

वेबर ने उन विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला है जो आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था से प्रभावित समाजों में पायी जाती है। जो निम्नलिखित है :-

1) Scientific Mode of Business Management :- आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था की प्रमुख विशेषता यह है कि यह व्यापार अथवा व्यवसाय के वैज्ञानिक ढंग को अधिक महत्व देती है। इसके अंतर्गत समाज में व्यवसाय की नयी पद्धतियों का विकास होने लगता है। बल्कि तार्किक आधार पर भविष्य में वस्तुओं की मांगों का अनुमान लगाकर साधनों का अधिकतम उपयोग करने का प्रयत्न किया जाता है।

2) Use of scientific Techniques in the system of production :- वेबर का मानना है कि पूंजीवादी समाजों में व्यवसाय करने वाले लोग नई-नई तकनीकों का प्रयोग करते रहते हैं जिससे वे अधिक से अधिक सफलता प्राप्त कर सके। उनका उद्देश्य ऐसे तरीकों पर विचार करना तथा उन्हें उपयोग में लाना होता है जिससे वस्तु के उत्पादन में होने वाले कच्चे माल, श्रम तथा प्रबंध का अधिक-से-अधिक उपयोग किया जा सके। इन समाजों में लोगों के परंपरागत सामंतवादी विचार बदलने लगते हैं। समाज में रोजगार के नये-नये अवसरों में वृद्धि होती है। श्रमिकों को इस तरह की पद्धतियों में मजदूरी और वेतन देने का प्रावधान किया जाता है। जिससे उनकी कार्य-कुशलता बढ़ सके। श्रमिकों की कार्य की दशाओं में इस तरह सुधार किया जाने लगता है जिससे वे अपने को सुरक्षित समझकर उत्पादन की प्रक्रिया में अधिकाधिक योगदान कर सके।

Scientific laws :- पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में समाज के

Scanned with CamScanner

नियमों में भी इस तरह परिवर्तन होने लगते हैं जिससे उत्पादन की प्रक्रिया से लगे सभी वर्ग को एक दूसरे का विश्वास प्राप्त हो सके। फलस्वरूप राज्य के द्वारा ऐसे कानून बनाये जाते हैं जो एक ओर उद्यमियों और श्रमिकों के हितों का संरक्षण कर सकें और दूसरी ओर औद्योगिक विकास के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार कर सकें। यह कानून तथा नियम किसी परम्परा पर आधारित न होकर वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार होते हैं।

4) Free Labour and Free Trade :-- मैक्सवेबर ने बतलाया कि पूँजीवादी समाजों में प्रत्येक व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता होती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत परंपरागत समाज का एक उदाहरण है जिसमें जाति व्यवस्था के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही जाति के लिए निर्धारित व्यवसाय करने के लिए बाध्य है। फलस्वरूप भारत में व्यावसायिक गतिशीलता बहुत कम हो गया है। दूसरी ओर पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था वाले समाजों में व्यावसायिक गतिशीलता ~~बहुत कम~~ हो इसलिए अधिक होती है कि वहाँ व्यक्ति को अपने काम अथवा व्यवसाय के चुनाव में किसी प्रथा अथवा परम्परा के द्वारा रोका नहीं जाता। यह स्थिति व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं तथा महत्वकांक्षा में संतुलन स्थापित करने का अवसर प्रदान करती है।

5) Organized Markets for Trade and Sale of Goods :- वेबर ने स्पष्ट किया कि आधुनिक पूँजीवादी समाजों में व्यापार तथा वस्तुओं की बिक्री

के लिए संगठित बाजारों का निर्माण किया जाता है। यह बाजार स्थानीय स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक के होते हैं। आर्थिक क्रियाओं के लिए इन बाजारों के अपने कुछ विशेष नियम होते हैं। इनमें तरीकों के लेन-देन को व्यवस्थित आधार पर संचालित किया जाता है तथा बड़े बड़े संगठनों द्वारा क्रय संबंधी गतिविधियों पर नियंत्रण रखा जाता है। वेबर का कथन है कि इस तरह के बाजारों का विकास मुख्यतः यूरोप की औद्योगिक क्रांति का परिणाम है।

इस प्रकार वेबर ने यह स्पष्ट किया कि पूंजीवाद का सार एक विशेष प्रकार की व्यावसायिक नैतिकता है जिसमें व्यक्ति का मूल्यांकन प्रदत्त प्रस्थितियों के आधार पर नहीं होता है बल्कि उसकी तार्किकता तथा कार्यकुशलता के आधार पर होता है।